फिल्म फेस्टिवल में दिखायी गयी पुरानी फिल्में

रांची. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आइजीएनसीए) रांची क्षेत्र केंद्र के तत्वावधान में प्रेस क्लब में जनसंचार और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में शिक्षकों और छात्रों के लिए शिक्षकों और छात्रों के लिए दो दिवसीय फिल्म महोत्सव का आयोजन हुआ. महोत्सव के मुख्य अतिथि फिल्मकार ऋषि प्रकाश मिश्रा ने फिल्म राजा हरिश्चंद्र के बारे में बताया और कहा कि आज के दौर में लोग पुरानी चीजों को भूलते जा रहे हैं. मुंबई के फिल्म निर्माता डॉ सुरेश शर्मा ने कई फिल्मों को प्रदर्शित किया. इनमें राजा हरिश्चंद्र,(1913)श्री कृष्ण जन्म (1918), कालिया मर्दन (1919), जमाई बाबू (1931), नाटेर पूजा (1932) जैसी फिल्में शामिल थीं.

प्रभात खबर
Thu, 24 January 2019
https://epaper.prabhatkhabar.com

समापन सिनेमा में इस्तेमाल की गयी तकनीकों को जाना

1903 से 1928 तक की साइलेंट फिल्में देखी

लाइफ रिपोर्टर @ रांची
life.ranchi@prabhatkhabar.in

इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स और रांची विवि की ओर से आयोजित साइलेंट एरा फिल्म फेस्टिवल का समापन गुरुवार को हुआ. प्रेस क्लब में दो दिनों तक चले इस फिल्म फेस्टिवल में 1903 से लेकर वर्ष 1928 तक की साइलेंट फिल्में प्रदर्शित की गयी.

इस फिल्म फेस्टिवल में विभिन्न विवि के विद्यार्थियों ने इन फिल्मों का आनंद लिया. वहीं, कल और आज की फिल्मों में इस्तेमाल की गयी तकनीकों के बारे में विस्तार से जाना.

प्रेस क्लब में आयोजित फेस्टिवल में फिल्म देखते विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थी.

स्वामी भवेशानंद ने की तारीफ

प्रो सुरेश शर्मा ने विद्यार्थियों को फिल्म की बारीकियों से रू-ब-रू कराया. विद्यार्थियों ने फिल्मों को लेकर कई सवाल भी पूछे. इससे पूर्व रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी भवेशानंद ने कहा कि इन फिल्मों को देखने से कई सारी जानकारियां मिलती हैं. कैसे कुछ कहे बिना कलाकार अपनी भावनाओं को दूसरे के सामने प्रकट करता है. उन्होंने कहा कि आज फिल्मों में इस्तेमाल होने वाली तकनीक काफी आगे निकल गयी है. आज समाज की कई समस्याओं व उसके निदान बताने का नुक्कड़ नाटक एक सशक्त माध्यम बन चुका है. वहीं, पत्रकारिता का भी महत्वपूर्ण योगदान है. इस संबंध में इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर ऑफ आर्ट्स के क्षेत्रीय कार्यालय के प्रोग्राम अफसर राकेश पांडेय ने बताया कि फेस्टिवल के अंतिम दिन पांच फिल्में दिखायी गयीं. इनमें वर्ष 1917 की लंका दहन, वर्ष 1925 की लाइट ऑफ एशिया, वर्ष 1929 की ए थ्रो ऑफ डाइस, वर्ष 1903 की दी लाइफ एंड पैशन ऑफ जिशस क्राइस व वर्ष 1928 की सिराज शामिल हैं.

प्रभात खबर
Fri, 25 January 2019
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/36099908

Reliving silent era of films

ACHINTYA GANGULY

Ranchi: At a time when loud music and cacophony are synonymous to a big-budget movie, film buffs across the capital got the rare opportunity to witness forgotten yet iconic silent movies during a two-day film festival, which concluded at Ranchi Press Club on Thursday.

Organised by the Ranchi chapter of Indira Gandhi Rashtriya Kala Kendra, ten films made between 1901 and 1931 were screened at the festival. All the films were brought here by Mumbai-based documentary film-maker Suresh Sharma.

Visitors were pleasantly thrilled when they got to watch a 1932 movie titled *Natir Puja*, the only film to be directed by Nobel laureate Rabindranath Tagore.

Other films that were screened at the festival were *Raja Harishchandra*, which is considered the first full-length Indian feature film made in 1913, *Shri Krishna Janma* (1918) and *Kaliya Mardan* (1919). All the three films were directed by Dadasaheb Phalke.

People watch *Light of Asia* at the film festival in Ranchi Press Club on Thursday.
Picture by Prashant Mitra

Jamaibabu (1931), a Bengali silent film by Kalipada Das and 1925 movie *Prem Sanyas (Light of Asia)* made by Franz Osten and Himanshu Rai were also screened. While *Jamaibabu* with its noteworthy comic time was greatly inspired by Charlie Chaplin films, *Prem Sanyas* was based on the life of Gautam Buddha.

"Around 1,300 films of varied durations were made during the silent era, out of which only 10 could be restored," said Suresh Sharma who willingly organises screening of the films whenever he is invited by any organisation.

"Cinema-goers nowadays cannot even dream of watching a film that has no dialogues. So we can very well apprehend how difficult it must have been for the film-makers in those days to convey the right message through their films," said Sharma.

Harendra Sinha, a retired assistant director (archaeology) of state government who was present at the festival, said, "That's true. It's wonderful how these film-makers managed to make such mature movies without any narration."

"I feel silent films should be re-evaluated to learn how film-makers like Dadasaheb Phalke established a communication with the viewers," added Arun Kumar, a film writer.

The Telegraph Ranchi
Edition 25 Jan 2019

at a an rld'

ishna, a free-
designer and
greed. "I hap-
by the dam
d stopped out
eadily agreed
vices when I
e cleanliness

, many stu-
raswati Vidya
Prabhat Tara
d in. "We were
after classes
ople here ap-
bute. The gov-
d install dust-
tudents said.
wever, is not
work. About
ay, she took to
n and wrote:
that a small
tful, commit-
n change the
it's the only
has. We are
(Friday), bet-
t 9am. Please
or one bag or
that's all it

Magic of silent films showcased

Ranchi: Students of filmmaking course from four colleges of Ranchi had their first rendezvous with silent films at the Indira Gandhi Centre of Arts (IGNCA) here on Thursday. Students of the course from Xt Xavier's College, Gossener College, Central University of Jharkhand and Amity University watched the silent films and later participated extensive discussions on the theme during the Silent Era Film Festival organised by IGNCA.

Aspiring filmmaker Kusum Chakraborty, who is a student of journalism and mass communication, told **TOI**: "It is surprising to see how with even fewer equipment, early filmmakers were able to make films with such great narratives. The use of music to make the narrative interesting is also very attractive. I learnt that filmmaking is a lot more than technology."

IGNCA (Ranchi) regional director Ajay Kumar Mishra said, "Cinema has evolved over the years as a medium of communication and as an art." TNN

T.O.I, 25.1.19 Ranchi

Ka this

CINEMA

Manikarnika: T
(Drama/Action/
★★★1/2
Cast: Kangana Ra
Danny Denzongpa
Direction: Radha K
Kangana Ranaut
Duration: 2 hours
Language: Hindi (
58888 code: man

■ *Manikarnika:*
biographical acc
waged a war aga
chronicles her jou
grew up, Bithoor, t
and eventually tu

Manikarn
Bachchan
throws lig
are fast being plu
seconds, we a
Manikarnika t
imposing screen
Kangana cap
frame and grows
film progresses.
performances a
scope for her t
beautiful momen
duty action scen
blood and sweat
Manikarnika to
the rest of the a
shine just as w

pped for 12 hrs tariff revision

s the capital
d as many wo-

across all platforms and gives
the viewers the flexibility to

भारतीय संस्कृति की समृद्धि में फिल्मों का महत्वपूर्ण योगदान: स्वामी भवेशानंद

साइलेंट एरा फिल्म महोत्सव के दूसरे दिन पांच फिल्मों का प्रदर्शन

रांची। साइलेंट एरा-फिल्म महोत्सव के दूसरे दिन 24 जनवरी को रांची के क्षेत्रीय निद. शक अजय कुमार मिश्रा ने सभी अतिथियों, शिक्षकों, प्रोफेसरों, अनुसंधान विद्वानों और छात्रों का स्वागत किया और आईजीएनसीए क्षेत्रीय केंद्र रांची के उद्देश्यों से अवगत कराया। उन्होंने अपने भाषण के माध्यम से चित्रित किया कि कैसे कला हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है और कैसे, वैदिक युग से इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने फिल्मों के महत्व और प्रतिभागियों के लिए यह कार्यक्रम कैसे फायदेमंद होगा, इसके बारे में भी जानकारी दी। इस अवसर के मुख्य अतिथि के रूप में रामकृष्ण मिशन के सचिव स्वामी भवेशानंद महाराज ने इस अवसर पर उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री विष्णु सी परिडा, झारखंड राज्य आजीविका संवर्धन सोसाइटी के मुख्य परिचालन अधिकारी, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महोत्सव के मुख्य अतिथि रामकृष्ण मिशन के सचिव स्वामी भवेशानंद महाराज ने हमारी संस्कृति से जोड़ते हुए फिल्मों के बारे में बताया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की समृद्धि और फिल्मों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होने के बारे में बताया। उन्होंने धर्म के बारे में बात की और छात्रों को अपने आप में सकारात्मक को फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे कड़ी मेहनत करें और भविष्य में सफल व्यक्तियों के रूप में समाज में योगदान दें। उत्सव में रांची के प्रतिष्ठित संस्थानों, अर्थात सेंट जेवियर्स कॉलेज, गोस्सनर कॉलेज, एमिटी विवि और केंद्रीय विवि एवं रांची विवि के लगभग 150 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। मुंबई के प्रख्यात फिल्म निर्माता डा.सुरेश शर्मा ने फिल्मों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विष्णु सी.परिदा, सीओओ जेएसएलपीएस ने इस कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए खुशी जाहिर की और बताया कि इस तरह के कार्यक्रम रांची में होना बहुत बड़ी उपलब्धि है और उन्होंने इंदि. रा गांधी राष्ट्रिय कला केंद्र को इस आयोजन के लिए धन्यवाद भी दिया। दूसरे दिन 24 जनवरी को पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई। दादा साहब फाल्के द्वारा निर्देशित पहली फिल्म लंका दहन। दूसरी फिल्म लाइट ऑफ एशिया, ए थ्रो ऑफ डाइस, द लाइफ एंड पैशन ऑफ जीसस क्राइस्ट एवं शिराज फिल्म का प्रदर्शन किया गया। पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग के बाद प्रतिभागियों के साथ बातचीत सत्र का संचालन डा.सुरेश शर्मा ने किया। सत्र में प्रतिभागियों के महत्वपूर्ण विश्लेषण और साइलेंट फिल्म्स की तकनीकताओं के बारे में बताया गया, जिससे वह अकादमिक रूप से लाभान्वित हुए। सत्र के पूरा होने के बाद आईजीएनसीए, आरसीआर के क्षेत्रीय निदेशक डा.अजय कुमार मिश्रा ने ऐसे सभी प्रयासों के लिए इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने उन फिल्मों की सूची के बारे में भी घोषणा की जिन्हें अगले दिन प्रदर्शित किया जाएगा।

फिल्म महोत्सव : स्टूडेंट्स ने देखी राजा हरिश्चंद्र समेत कई फिल्में

Dainik Bhaskar | Jan 24, 2019, 03:40 AM IST

Ranchi News - **रांची | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची (आईजीएनसीए) के तत्वावधान में दो दिवसीय फिल्म...**

रांची | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची (आईजीएनसीए) के तत्वावधान में दो दिवसीय फिल्म महोत्सव का आगाज बुधवार को प्रेस क्लब में हुआ। बतौर मुख्य अतिथि फिल्मकार प्रकाश मिश्रा ने कहा कि हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। अपनी संस्कृति को संरक्षित करने की जरूरत है। फिल्म महोत्सव में सेंट जेवियर्स कॉलेज, गोस्सनर कॉलेज, एमिटी विवि, सेंट्रल यूनिवर्सिटी और आरयू के लगभग 150 स्टूडेंट्स शामिल हुए। बुधवार को पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र (1913) प्रदर्शित की गई। फिल्म का पटकथा लेखन और निर्देशन दादासाहेब फाल्के ने किया था। इसके बाद, कालिया मर्दन (1919) को प्रदर्शित किया गया।

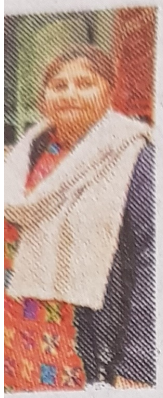

युवराज पासवान, पिया बर्मन, इमरान अहमद, शाहिद रहमान, आसिफ, समर्पणा, पंकज, सत्यम, नेहा और नीलम उपस्थित थे।

आईजीएनसीए के फिल्म महोत्सव का समापन दिखाई गईं कई फिल्में

सिटी रिपोर्टर | रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला (आईजीएनसीए) केंद्र के क्षेत्रीय शाखा रांची द्वारा दो दिवसीय फिल्म फेस्टिवल का समापन गुरुवार को प्रेस क्लब में हुआ। बतौर मुख्य अतिथि रामकृष्ण मिशन के स्वामी भवेशानंद ने कहा कि फिल्म महोत्सव संबंधित विषय के स्टूडेंट्स और फैकल्टी के लिए उपयोगी साबित होगा। आईजीएनसीए के क्षेत्रीय निदेशक अजय कुमार मिश्रा ने कहा कि कला हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। इस फिल्म महोत्सव में संत जेवियर्स कॉलेज, गोस्सनर कॉलेज, एमिटी विश्वविद्यालय और केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं रांची विश्वविद्यालय के लगभग 150 स्टूडेंट्स शामिल हुए। मौके पर जेएसएलपीएस के सीईओ विष्णु परिंदा ने कहा ऐसा कार्यक्रम रांची में होना बड़ी बात है। दूसरे दिन पांच फिल्मों की स्क्रिनिंग की गई। विशेषज्ञ सुरेश शर्मा ने प्रतिभागियों को फिल्म की तकनीकी पहलुओं के बारे में जानकारी दी।

दस हजार में बनी थी देश की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र'

जागरण संवाददाता, रांची: फिल्मों में रुचि रखने वाले यह जानते हैं कि अपने देश में पहली फिल्म जो बनी थी, वह राजा हरिश्चंद्र थी। यह अवाक फिल्म थी। दादा साहब फाल्के ने इसका निर्माण 1913 में किया था। पर, यह नहीं पता कि यह फिल्म दस हजार में बनी थी और करीब 47 हजार रुपये की कमाई की थी।

फिल्म को लेकर जानकारी देते अधिकारी ● जागरण

बुधवार को रांची प्रेस क्लब में दो दिवसीय साइलेंट एरा फिल्म फेस्टिवल इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची की ओर से शुरू हुई। महोत्सव का उद्घाटन क्षेत्रीय निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची के डॉ. अजय कुमार मिश्रा ने किया। महोत्सव के मुख्य अतिथि ऋषि प्रकाश मिश्र ने कहा कि आज के दौर में लोग पुरानी चीजों को भूलते जा रहे हैं। हमें अपनी संस्कृति को जानना जरूरी है। यह फिल्मोत्सव हमारे उस दौर की याद दिलाता है। तब महिला पात्रों के लिए भी पुरुष ही होते थे। अवाक फिल्मों के बारे में मुंबई के प्रख्यात फिल्म निर्माता व पत्रकार डॉ. सुरेश शर्मा ने जानकारी दी। डॉ. सुरेश शर्मा, हिंदी साहित्य, पत्रकार और फिल्म समीक्षक हैं। रघुवीर सहाय रचनावली, बेनीपुरी ग्रंथावली, प्रभाष जोशी की पांच किताबों का संपादन किया है। फिल्म क्रिटिक का नेशनल अवार्ड भी प्राप्त हुआ।

डॉ शर्मा ने बताया कि 1913 में राजा हरिश्चंद्र देश की पहली अवाक फिल्म है। मई में इसका प्रदर्शन हुआ। उस समय दस हजार में बनी थी और 47 हजार रुपये की कमाई हुई थी। यह फिल्म क्राइस्ट की प्रेरणा से बनाई थी। दूसरी फिल्म कालिया मर्दन थी। पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग के बाद, प्रतिभागियों के साथ बातचीत सत्र का संचालन डॉ. सुरेश शर्मा ने किया। सत्र में प्रतिभागियों को फिल्मों के महत्वपूर्ण विश्लेषण और साइलेंट फिल्म्स की तकनीक के बारे में बताया। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अजय कुमार मिश्रा ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में डॉ हरेंद्र प्रसाद सिन्हा, दिनेश सिंह के अलावा करीब डेढ़ सौ छात्र-छात्राएं थीं।

आज की फिल्में : द लाइट एंड पैशन आफ जीसस क्राइस्ट-1903-19 मिनट, जमाई बाबू-1931-23 मिनट, लंका दहन 1917, पांच मिनट, शिराज-1928- एक घंटा 24 मिनट, नोतिर पूजा-1932, 32 मिनट।

फिल्मों के शौकीनों ने देखी दादा साहेब फाल्के की 'लंका दहन'

फिल्म स्क्रीनिंग

रांची | संवाददाता

साइलेंट एरा फिल्म महोत्सव के समापन के मौके पर गुरुवार को फिल्म की स्क्रीनिंग का लुत्फ उठाते छात्र-छात्राएं। • हिन्दुस्तान

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा और रांची विश्वविद्यालय की ओर से प्रेस क्लब में आयोजित साइलेंट एरा फिल्म महोत्सव में आखिरी दिन गुरुवार को पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग हुई। दादा साहब फाल्के द्वारा निर्देशित पहली फिल्म लंका दहन (1917) थी। लंका दहन, राजा हरीशचंद्र के बाद फाल्के की दूसरी फीचर फिल्म थी।

फ्रांज ओस्टेन द्वारा निर्देशित महात्मा बुद्ध के जीवन पर आधारित दूसरी फिल्म लाइट ऑफ एशिया दिखाई गयी। तीसरी फिल्म फ्रांज ओस्टेन द्वारा निर्देशित ए थ्रो ऑफ डाइस (1929) को अगले प्रदर्शित किया गया। फिल्म में दो प्रतिद्वंद्वी राजाओं रंजीत और साहट की कहानी दिखाई गयी।

इसके बाद द लाइफ एंड पैशन ऑफ जीसस क्राइस्ट (1903) फिल्म का प्रदर्शन हुआ, जिसका निर्देशन लुसिएन नूगेट और फर्डिनेंड जेका ने किया था। आखिरी फिल्म शिराज (1928) थी, जिसे फ्रांज ओस्टेन ने निर्देशित किया था। फिल्म 17वीं सदी के मुगल शासक शाहजहां और उसकी रानी के बीच प्रेम प्रसंग पर आधारित थी।

महोत्सव में दूसरे दिन मुख्य अतिथि के रूप में श्री रामकृष्ण मिशन के सचिव स्वामी भवेशानंद शामिल हुए।

उन्होंने संस्कृति से जोड़ते हुए लोगों को फिल्म के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की समृद्धि में फिल्मों का एक महत्वपूर्ण रोल है। उन्होंने धर्म के बारे में बात की और छात्रों को अपने आप में सकारात्मकता को फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया।

रांची में ऐसा कार्यक्रम होना बहुत बड़ी उपलब्धि

फिल्म महोत्सव के आखिरी दिन विशिष्ट अतिथि बिष्णु सी परिदा ने कहा कि इस तरह का कार्यक्रम रांची में होना बहुत बड़ी उपलब्धि है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने ऐसे सभी प्रयासों के लिए इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए धन्यवाद दिया। फिल्मों की स्क्रीनिंग के बाद प्रतिभागियों डॉ सुरेश शर्मा ने साइलेंट फिल्म्स की तकनीक के बारे में जानकारी दी।

फिल्म महोत्सव के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी भावेशानंद व अन्य।

राजधानी के सिनेप्रेमी साइलेंट एरा फिल्मों से परिचित हुए

रांची | संवाददाता

साइलेंट एरा फिल्म महोत्सव शुरू
पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग हुई

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा रांची और रांची विश्वविद्यालय की ओर से दो दिवसीय साइलेंट एरा फिल्म (मूक) महोत्सव प्रेस क्लब में शुरू हुआ। मुख्य अतिथि फिल्मकार ऋषि प्रकाश मिश्रा, मुंबई के प्रख्यात फिल्म निर्माता डॉ सुरेश शर्मा और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने महोत्सव का शुभारंभ किया। इसमें जनसंचार और फिल्म निर्माण के क्षेत्र के क्षेत्र में सक्रिय शिक्षकों और विभिन्न संस्थानों के लगभग 150 छात्रों ने हिस्सा लिया।

पांच फिल्में दिखाई गईं : पहले दिन पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग हुई। पहली फिल्म 1913 में बनी राजा हरिश्चंद्र प्रदर्शित की गयी। फिल्म की पटकथा और निर्देशन दादासाहेब फाल्के द्वारा किया गया है। फिल्म हरीशचंद्र की भक्ति पर है। वह अपने राज्य का त्याग करने के लिए तैयार थे।

कृष्ण जन्म (1918) दूसरी फिल्म थी, जिसमें भगवान कृष्ण के जन्म और उत्थान का प्रदर्शन किया गया था। कालिया मर्दन (1919) को प्रदर्शित किया गया, जहां लीला या दैवीय नाटक के प्रसंग दिखाए गए। दोनों फिल्मों का निर्देशन दादासाहेब फाल्के ने की है। हास्य फिल्म जमाई बाबू (1931) व नाटेर पूजा (1932) दिखाई गयी। महोत्सव में प्रख्यात निर्माताओं की 10 मूक फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा।

छात्रों ने पूछे सवाल : पांच फिल्मों की स्क्रीनिंग के बाद छात्रों के साथ बातचीत सत्र का संचालन डॉ सुरेश शर्मा ने किया। प्रतिभागियों को फिल्मों के विश्लेषण और साइलेंट फिल्म्स की तकनीक के बारे में बताया गया। इस अवसर पर छात्रों ने कई सवाल भी पूछे। क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने वेदों को याद करते हुए फिल्म जगत की दुनिया की बात की। ऋषि प्रकाश मिश्रा ने हरिश्चंद्र के बारे में बताते हुए कहा कि आज के दौर में लोग पुरानी चीजों को भूलते जा रहे हैं। इसके संरक्षण की जरूरत है।

पहली फिल्म 1913 में बनी राजा हरिश्चंद्र का प्रदर्शन।

1919 में बनी कालिया मर्दन ने दर्शकों को चकित किया।

1918 में बनी फिल्म कृष्ण जन्म का प्रदर्शन भी किया गया।

150

शिक्षकों और विभिन्न संस्थानों के जनसंचार और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सक्रिय छात्रों ने हिस्सा लिया

10

मूक फिल्मों का प्रदर्शन होगा महोत्सव में प्रख्यात निर्माताओं की

मुख्य बातें

- प्रतिभागियों को फिल्मों के विश्लेषण और साइलेंट फिल्म्स की तकनीक के बारे में बताया गया
- ऋषि प्रकाश मिश्रा ने कहा कि आज के दौर में लोग पुरानी चीजें भूल रहे हैं, इसके संरक्षण की जरूरत

प्रेस क्लब में शुरू दो दिवसीय साइलेंट एरा फिल्म महोत्सव में शामिल सिनेप्रेमी।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का दो दिवसीय फिल्म महोत्सव

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची एवं रांची विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में बुधवार को रांची प्रेस क्लब में दो दिवसीय फिल्म महोत्सव की शुरुआत हुयी। महोत्सव का आयोजन में जनसंचार और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में शिक्षकों और छात्रों के लिए किया गया है। डॉ अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक, इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय कला केंद्र,रांची ने वेदों को याद करते हुए फिल्म जगत की दुनिया की बात की। उन्होंने सभी अतिथियों, शिक्षकों, प्रोफेसरों, अनुसंधान विद्वानों और छात्रों का स्वागत किया। महोत्सव के मुख्य अतिथि फिमकार ऋषि प्रकाश मिश्रा ने कहा कि आज के दौर में लोग पुरानी चीजों को भूलते जा रहे है। धीरे धीरे संस्कृति विलुप्त होते जा रही है। जिसके संरक्षण में हमें कार्य करने की बहुत जरुरत है, जो हमरे आने वाली पीढ़ी के लिए प्रतिबिम्ब के सामान है। उत्सव में संत जेवियर्स कॉलेज, गॉसनर कॉलेज, एमिटी विश्वविद्यालय और केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं रांची विश्वविद्यालय के लगभग 150 छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। मुंबई के प्रख्यातफिल्म निर्माता डॉ. सुरेश शर्मा ने फिल्मों का प्रदर्शन किया। महोत्सव में प्रख्यात फिल्म निर्माताओं द्वारा निर्देशित 10 मूक फिल्मों का प्रदर्शन किया जाना

है। इसके तहत पहले दिन 5 मूक फिल्मों का प्रदर्शन किया गय। पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र (1913) प्रदिशत की गयी। फिल्म की पटकथा और निर्देशन दादा साहेब फाल्के द्वारा किया गया है। यह महाभारत की कथा पर आधारित है। पांच फिल्मों की स्क्रीनिग के बाद प्रतिभागियों के साथ बातचीत सत्र का संचालन डॉ. सुरेश शर्मा ने किया। सत्र में प्रतिभागियों को फिल्मों के महत्वपूर्ण विश्लेषण और साइलेंट फिल्म्स की तकनीकताओं के बारे में बताया गया। जिसमे वह अकादमिक रूप से लाभान्वित हुए। सत्र के पूरा होने के बाद आईजीएनसीए, आरसीआर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने ऐसे सभी प्रयासों के लिए इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए धन्यवाद दिया।

Gen-Y revisits magic of silent movies

KELLY KISLAYA ■ RANCHI

A picture is worth a thousand words, but a motion picture depicts even more! From the first feature film made in the country, to the film that inspired Dadasaheb Phalke to make the first motion picture, a number of inspiring films were showcased in the two-day Silent Era Film Festival organized in Ranchi.

The film festival, organized by Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA)regional Centre here, showcased 10 of the greatest silent films in the history of India, including Raja Harishchandra, the first motion picture directed by Dadasaheb Phalke, Light of Asia, the film based on the life of Buddha directed by German director Franz Osten, The Life and Passion of Jesus Christ made in France directed by Lucien Nouguet and Ferdinand Zecca which inspired Phlake to make the first film and many more. The films were curated by filmmaker, coloumnist and journalist, Suresh Sharma.

Talking about the film festival, programme assistant at IGNCA Sumedha Sengupta said, "The festival has been organized especially for the students of mass communication, film studies and journalism in order to introduce them to the first step of Indian cinema, which was the silent era."

More than 150 students from various colleges of the city including St. Xavier's College, Gossner College, Amity University and Central University of Jharkhand witnessed the magic of silent films in the two day festival.

College students watching the silent movie during "Silent Era Film Festival" organised by Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) of Regional Centre Ranchi (RCR) at Ranchi Press Club in Ranchi on Thursday Vinay Murmu I Pioneer

The film festival, organised by Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), regional Centre here showcased 10 of the greatest silent films in the history of India

The film festival was also attended by research scholars of film studies. Jayshree, a student of mass communication second year at Gossner College said, "This was a magical experience. It is shocking for someone in my generation to see how a beautiful movie can be made without a single sound.

There was such pin drop silence in the auditorium as the film played that I could hear myself breathe."

Shrishti Raj, a first year student of St. Xavier's College who was mesmerized by the films said, "This is my first time experience of watching silent films. Everything was so real, there was no stunt double, no overacting, no VFX and no added effects but still every film was perfect. It really showed the power of cinematography and acting."

IGNCA focuses on research and documentation of art and culture. Regional Director of the Centre Ajay Kumar Mishra said, "In Jharkhand we are focusing on research on tribal culture, specially the particularly vulnerable tribal groups (PVTgs) like Asur and Paharia."